HW
8/7/21

तुम कब जाओगे अतिथि

सारांश

लेखक शरद जोशी के घर में एक अतिथि आए हैं। आए हुए अतिथि के सेवा-सत्कार में लेखक और उनकी पत्नी ने अपनी ओर से कोई कमी नहीं छोड़ी। लेखक को लगा कि अतिथि आने के बाद जल्द ही चले जाएंगे परन्तु बहुत दिन बितने के बावजूद भी वह जाने का नाम ही नहीं ले रहे थे। अतिथि ने तो कुछ और दिन रुकने का संकेत भी दे दिया। अतिथि ने अपने गंदे कपड़ों की धुलाई के लिए धोबी को देने की चर्चा कि। लेखक को इस बात से गुस्सा तो बहुत आया लेकिन लॉण्ड्री से कपड़े धुलाकर लाना ही सही समझा। लेकिन फिर भी अतिथि वहाँ से नहीं गए। इस बात से लेखक और उनकी पत्नी दोनों ही परेशान हो चुके थे। पहले जो अतिथि देवता के समान लग रहे थे, वे अभी दानव प्रतीत होने लगे। लेखक ने यह कहा है जो अतिथि कुछ ही दिनों के लिए आते हैं उनका शानदार स्वागत होता है परन्तु जो अतिथि ज्यादा समय के लिए, आतिथ्य सुख भोग करने के लिए आते हैं, उनका मेजबान द्वारा आदर सम्मान नहीं होता है।
लेखक ने यह भी कहा है कि, दूसरों के घर में रहकर आदर सत्कार प्राप्त करना सभी को

अच्छा लगता है। परंतु इसका मतलब वह नहीं कि अपना घर छोड़ कर दूसरों के घर में रहने लगें। लेखक अंत में अपने अतिथि से परेशान होकर कहते हैं, "उफ, तुम कब जाओगे अतिथि?"